अमृतलाल नागर का साहित्य

डॉ. आर.एम. जाधव
डॉ. भगवान जाधव

Scanned by CamScanner

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में गाँधीवादी विचार धारा 231
—डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे

नाच्यौ बहुत गोपल की निर्गुणीया 235
—प्रा. डॉ. कल्याण गुरुनाथ

सामाजिक दस्तावेज 'अमृत और विष' 238
—प्रा. डॉ मा. ना. गायकवाड़

बिखरे तिनके उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्याएँ और युवावर्ग का असफल विद्रोह 241
—डॉ. चांदणी लक्ष्मण पैचांगे

अमृतलाल नागर के 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास में नारी संघर्ष 245
—डॉ. जलालखान पठाण

नागर जी की मानववादी दृष्टि : भूख के सन्दर्भ में 249
—प्रा. डॉ. परविंदर कौर महाजन, प्रा. घुमे मीना भाऊराव

'मानस का हंस' उपन्यास में युगबोध 253
—प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधर गाडे

'बिखरे तिनके' उपन्यास में चित्रित राजनीतिक चेतना 258
—प्रा. डॉ. सुभाष नागोराव क्षीरसागर

उपन्यासकार अमृतलाल नागर 262
—प्रा. डॉ. जाधव अर्जुन रतन

अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यासों में युगबोध 268
—प्रा. डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव

अमृतलाल नागर की कहानियों में अभिव्यक्त समस्याएँ 272
—प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में मानवतावाद 275
—डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड़

'मानस का हंस' उपन्यास में व्यक्त समष्टिभाव 279
—प्रा. डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे

व्यष्टि और समष्टि के अनगिनत विसंगतियों का दस्तावेज बूँद और समुद्र 284
—डॉ. यशवंतकर संतोष कुमार

Scanned by CamScanner

अमृतलाल नागर की कहानियों में अभिव्यक्त समस्याएँ

प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

आधुनिक काल में साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं के समान कहानी साहित्य में भी समृद्ध हो गई है। समृद्ध कहानीकारों में मौलिक प्रतिभा से संपन्न कहानीकार अमृतलाल नागरजी भी एक कहानीकार है। नागरजी ने अपने अलग-अलग कहानियों के माध्यम से देश और समाज एवं मनुष्य के समस्याओं को चित्रित करने का प्रयास किया है। नागरजी ने अपने कहानियों से जिनमें मनुष्य के भीतर निहित मानवता को जागृत करने का प्रयास किया है। 'एटमबम', '14 एप्रिल', 'एक था गाँधी', 'आदमी-नहीं! नहीं!!' और 'जय-पराजय' ऐसी ही कहानियाँ है। जिसमें इंसान की भीतर की मानवता को जगाने का प्रयास अमृतलाल नागरजीने किया है। आदमी किस तरह से खुद ही समस्याग्रस्त होने कारण दूसरों को समस्याबाध्य बनाता है। यह हमें इन कहानियों में नजर आता है।

इनमें लेखक ने विज्ञान के विनाशकारी रूप और साम्प्रदायिकता एंव रंगभेद के विरुद्ध अपनी आवाज ऊँची करने का प्रयास किया है। राजनीति के क्षेत्र में जहाँ उसका ध्यान जय-ध्वनियों की दिशा में गया है। वहाँ ऐसे प्राणियों के असीम दुःख और मूक बलिदान के मूल्यों को भी उसकी आत्मा ने पहचाना है। जिस पर नागरजी की दृष्टि पड़ी है।

दूसरे प्रकार की कहानियों में अंध-विश्वास पर गहरा आघात नागरजी ने किया है। उदाहरण के तौर पर—'जंतर-मंतर' और 'मरघट के कुत्ते' शीर्षक कहानियों में हम देख सकते है। अनपढ़ जनता आज भी कुछ लोगो की धूर्तता और असामाजिक कृत्यों का किस प्रकार शिकार होती है। यह इन कहानियों में अमृतलाल नागरजी ने अभिव्यक्त किया है। तीसरे प्रकार की कहानियों में थोड़ा मानवता का पुट है। 'बेबी की प्रेम कहानी' में वच्चों के बीच विकसित होने वाली कोमल-भावना पर नागरजीने नजर डाली है। और कोमल-प्रेमभावना की समस्या को उजागर करके यह समस्या किस तरह विघातक होती चली जाती है। यह इस कहानी में नजर आता है। ऐसी भावुकता आगे चलकर हानिकारक सिद्ध भी होती है।

Scanned by CamScanner

दूसरी कहानी 'सुखी नदियाँ' के माध्यम से नागरजी ने आधुनिका का प्रेम कितना कृत्रिम उथला और सारहीन होता है। यह इस कहानी में बताया गया है। सूखी नदी किसी के काम नही आती है। उसी तरह से आधुनिका का कृत्रिम प्रेम सारहीन होता है। यह दिखाया गया है। अमृतलाल नागरजी की चौथे प्रकार की कहानियाँ व्यंग्यप्रधान कहानियाँ है। उसमें 'डॉ. फरनीचर पलट' और 'कलार्क ऋषि का शाप' यह कहानियाँ है। डॉ. माखनलाल और उसका नौकर रामू के माध्यम से समाज में अवसरवादी लोग किस तरह से फर्जी कागजात निकालकर उसका लाभ उठाते है। इस समस्या के लोकर 'डॉ. फरनीचर पलट' इस कहानी में व्यंग्यात्मक रूप में नागरजीने इस समस्या को अभिव्यक्त किया है। 'कलार्कऋषि का शाप' इस कहानी में व्यंग्यात्मक रूप में कलार्कऋषि जमीन का टुकडा किस तरह बंजर बन जाता है। यह बताया गया है। लेकिन दप्तर में काम करने कलार्क के शाप से किस तरह यह पूरी व्यवस्था ही भ्रष्टाचार में बंजर होती चली जा रही है। इस समस्या को अमृतलाल नागरजी ने 'कलार्क ऋषि का शाप' इस कहानी में इस समस्या को व्यंग्यात्मक ढंग से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। इस व्यंग्यात्मक कहानियों में उस परिस्थिती का चित्रण है जिसके कारण मनुष्य के स्वभाव में विकृतियाँ स्वभाविक रूप से आ जाती हैं। एक नई शैली में पूँजीपतियों के शोषण की वजह से भयंकर परिणाम पर प्रकाश नागरजी डालते है। व्यंग यहाँ स्वच्छ और सोद्देश्य है।

अमृतलाल नागरजी ने कथा-साहित्य के सामन्य प्रवाह में न पड़कर अपनी मौलिक सृजन शक्ति का परिचय दिया है। जहाँ वही सस्ते रोमांस और कच्ची भावुकता का आज बोल बाला है। सामान्य पाठक ऐसी कहानियाँ को पढ़ते-पढ़ते अब ऊब गया है। और चाहता है कि मनोंरजन के साथ ही अध्ययन और मनन के लिए भिन्न प्रकार की साम्रगी मिलती है। ऐसी कहानियों से चेतना मिलती है। नागरजी ने ऐसा कहानियों का सर्जन किया है। देश-विदेश में समय-समय पर न जाने कितनी महत्वपूर्ण घटना घटती रहती है। मानव जाति पर उसका व्यापक प्रभाव भी पड़ता है। अतः पहले ऐसी महान घटनाओं की ओर ध्यान देना, फिर उनके विषय प्रभाव को लक्षित करना, उस अन्याय या निराश के विरुद्ध मानव चेतना को जागृत करना, यह कार्य नागरजी ने किया है। बहुत व्यापक चेतना संपन्न व्यक्ति ही यह काम कर सकता है। केवल ऐसा व्यक्ति जो मानव जाति के दुःख दर्द को पहचानता है और हृदय से मानवता का प्रेमी है। जो मानव जगत का उद्धार चाहता हो। यह नागरजी भावना है। यह भावना उनकी कहानियों में एवं साहित्य में नजर आती है।

अमृतलाल नागरजी ने अपने कहानियों में व्यक्ति के मनोविज्ञान से लेकर संसार की बड़ी समस्याओं को उठाया है। इनमें बहुत सी महत्वपूर्ण घटनाएँ है। जैसे 42 का विद्रोह, बारूद के जहाज में आग लगना, हिरोशिमा में एटमबम गिरना, भारत में साम्प्रदायिक दंगो का निर्माण होना ऐसी बहुत महत्वपूर्ण समस्यायों का वर्णन हमें नागरजी की कहानियाँ में मिलता है। इससे यह सिद्ध होता है कि, नागरजी एक जागरूक साहित्यकार

Scanned by CamScanner

एवं कहानीकार है। दूसरी ओर नागरजी ने अपने कहानियों में शहरी जीवन और उसकी सभ्यता पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए उसे चित्रित किया है। जैसे प्रेमचन्द की कहानियाँ मुख्यतः गाँव के जीवन को लेकर चलती है। उसी प्रकार अमृतलाल नागरजी की कहानियाँ हमारे युग और आधुनिक जीवन का दुहरा प्रतिनिधित्व करती है।

नागरजी ने बढ़े-से-बढ़े दुःख, शोक और विनाश में भी मानवीय सम्बधों के भीतर की मर्मस्पर्शिता को पहचाना है। एक क्षण के लिए भी वे जीवन के कल्याणकारी स्वरूप को अपने आँखो से ओझल नहीं होने देते है। अतः उन्हें सच्चे अर्थो में मानवतावादी कवि कहा जा सकता है। नागरजी घृणा के विरुद्ध प्रेम के पुजारी है। संभवतः यही उनकी कहानियों की वास्तविक शक्ति है।

नागरजी साहित्य की दृष्टि से इन कहानियों की सबसे बढ़ी विशेषता है कि, समस्या प्रधान कहानियों में समस्या परिणाम बात को स्वाभाविक ढंग से कहने का गुण नागरजी में हमें नजर आता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मरघट के कुत्ते–अमृतलाल नागर
2. जन्तर-मन्तर–अमृतलाल नागर
3. बेबी की प्रेम कहानी–अमृतलाल नागर
4. सूखी नदियाँ–अमृतलाल नागर
5. 14 एप्रिल–अमृतलाल नागर
6. कलार्क ऋषि का शाप–अमृतलाल नागर
7. डॉक्टर फरनीचर पलट–अमृतलाल नागर

Scanned by CamScanner

₹ 750/-

ISBN 978-93-86236-21-0

A. R. PUBLISHING CO.

Publishers & Distributors

1/11829 Panchsheel Garden, Naveen Shahdara
Delhi-110032, Mob. 09968084132, 09910947941
e-mail: arpublishingco11@gmail.com

Scanned by CamScanner